भोज का प्रचार

''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो'' (1 कुरिन्थियों 11:26)।

सप्ताह के पहले दिन मसीही लोगों द्वारा प्रभु भोज को मनाने के समय एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात होती है। यह वह समय होता है जब कलीसिया यीशु की मृत्यु का प्रचार करती है! पौलुस ने कहा, ''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।'' इस तथ्य के प्रकाश में, यह घटना कितनी पवित्र है!

रोटी और कटोरे में भाग लेते हुए यीशु की मृत्यु का स्मरण करते हुए हम प्रचार करते हैं। हम विश्वास की नज़र से उसकी देह के बलिदान होने और हमारे उद्धार के लिए उसके लहू के बहाय जाने को देखते हैं। इस अर्थ में भोज *चिन्तनशील स्मरणोत्सव* है।

इसके अलावा इसे मनाते हुए हम मसीह की उपस्थिति में एक विशेष ढंग से प्रवेश करते हैं। हम उसके साथ सहभागिता में खाते हैं (देखें मत्ती 26:29)। इस सच्चाई में हम *एक व्यक्तिगत सांझ को* अर्थात मसीह के साथ भीतरी और वर्तमान साथ को देखते हैं। हम संसार के सामने यह अंगीकार करते हैं कि हम मानते हैं कि उसकी मृत्यु हमें हमारे पापों से बचाती है। शेष सारे समय में, संसार भर के विश्वासी मसीही, प्रत्येक रविवार को इस भोज में भाग लेकर इस बात की पुष्टि करेंगे कि यीशु उनके लिए मरा। भोज एक गवाही है जिसे यीशु ने हमें संसार को देने का जिम्मा दिया है।

''प्रचार'' शब्द विशेषकर शिक्षास्पद है। इसमें मौखिक घोषणा का स्वाद है। अपनी प्रार्थनाओं में, इसके उद्देश्य को दोहराने में, और खामोशी से, भक्तिपूर्ण ढंग से इसे स्मरण रखने में, हम प्रभु की मृत्यु की घोषणा करते हैं। नये नियम में ''प्रचार'' शब्द का इस्तेमाल लगभग हर कहीं सुसमाचार के सम्बन्ध में हुआ है। मसीही लोग भोज में भाग लेकर प्रचार करते हैं? एक अर्थ में हम उसकी मृत्यु, दफ़नाए जाने और पुनरुत्थान के सुसमाचार का प्रचार करते हैं। इस वचन के लिए पवित्र आत्मा द्वारा चुने गए वर्तमानकाल में निरन्तरता की आत्मा है। घोषणा प्रत्येक रविवार को, सदियों तक, समय के अन्त तक होनी है। जब हम भोज को खाते हैं, यह प्रचार होता रहता है। यह तीन दिशाओं में चलता है।

हमारे अपने मनों की ओर

हम अपने ही मनों को प्रचार करते हैं। इस भोज को खाकर हम अपने आपको याद दिलाते हैं कि यीशु की देह और लहू में हमारा उद्धार करवाया है। यह मनाया जाना शारीरिक से बढ़कर मानसिक है। हम उसके बलिदान और प्रायश्चित पर *विचार* करने के लिए रोटी में से खाते और दाख के रस में से पीते हैं। खाने और पीने का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है बल्कि आज्ञापालन के एक कार्य के रूप में इसे याद करना हमें इसे नये सिरे से धन्यवाद करने, आत्मिक भोज और

ईश्वरीय सहभागिता में ले आता है।

एक-दूसरे के मनों की ओर

हम एक दूसरे के मनों को प्रचार करते हैं। यह भोज कलीसिया का एक कार्य है यानी परमेश्वर की सन्तान द्वारा मिलकर किया जाने वाला कार्य। इस कार्य में यीशु की देह उसकी शारीरिक देह और उस आत्मिक बलिदान को याद करती है जो उसने क्रूस पर दिया। हमारी आराधना भीतर को, बाहर को और ऊपर को जाती है। हम अपने आप से, एक-दूसरे से और अपने उद्धारकर्त्ता और अपने परमेश्वर से बातें करते हैं। हम एक दूसरे को बताते हैं, ''मैं मानता हूं कि यीशु मेरे लिए मरा, और मैं मानता हूं कि अपनी मृत्यु के द्वारा उसने हम सब को अपनी देह में इकट्ठा किया है।''

गैर मसीही लोगों के मनों की ओर

हम गैर मसीही लोगों के मनों को प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हैं। यह भोज कलीसिया के लिए पापियों को याद दिलाते रहने का तरीका है कि यीशु ही संसार का उद्धारकर्त्ता है। उसका भोज कलीसिया और संसार के लिए उसकी यादगार है। जब भी भोज लिया जाता है, उसकी मृत्यु का प्रचार उन लोगों में किया जाता है जो इसे देखते या इससे परिचित हो सकते हैं। सप्ताह के आरम्भ में इसका मनाया जाना उसके दोबारा आने तक उसकी मृत्यु की घोषणा वफ़ादारी से करता रहेगा।

सारांश

अपने प्रेरितों को रोटी में से खाने और कटोरे में से पीने के द्वारा याद रखने के लिए कहकर यीशु यह घोषणा कर रहा था कि उसकी मृत्यु होने वाली है। उसके काम प्रगट करने वाले और पूर्वापेक्षित होते थे। प्रभु भोज में भाग लेकर हम सबसे बड़े तथ्य के रूप में उसकी मृत्यु का प्रचार करते हैं। हम उस ऐतिहासिक मृत्यु की ओर पीछे को मुड़कर देखते हैं जो उसमें सही थी। वास्तव में जितनी बार हम इसे लेते हैं, हम इसे प्रभु के आने तक उसकी मृत्यु का ही प्रचार करते हैं।

''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:41, 42)।

''प्रभु की मृत्यु का जब तक वह न आए [वाक्यांश] में भोजन की तीन मुख्य बातें हैं। मृत्यु क्रूस पर मसीह की मृत्यु है जिसे सुसमाचार का आधार माना जाता था और जिसके द्वारा नई वाचा की स्थापना हुई थी। जब तक वह न आए मसीही लोगों की [भविष्य] की आशा को दिखाता है। प्रभु मसीह के जीवित प्रभु होने पर ज़ोर देता है।''[1]

टिप्पणी

फ्रैड फिशर, *कमैन्ट्री ऑन 1 एंड 2 कोरिन्थयंस* (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1975), 187.